वैश्विक आर्थिक संकट – कारण और प्रभाव

- डॉ ब्रजेश श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर – अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर चित्रकूट

शोध सारांश

वैश्विक आर्थिक संकट (Global Financial Crisis- GFC) का अर्थ है 2007 से 2009 की शुरुआत के बीच वैश्विक वित्तीय बाज़ार और बैंकिंग प्रणाली में बहुत ज़्यादा दबाव का सामना करना । GFC के दौरान, संयुक्त राज्य आवास बाजार में मंदी जो एक वित्तीय संकट की वजह बनी जो आगे वैश्विक वित्तीय प्रणाली से जुड़ाव के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र से बाकी दुनिया में फैल गया। दुनिया भर के कई बैंकों को बड़ा नुकसान हुआ और वे बैंक दिवालियापन से बचने के लिए सरकारी मदद पर निर्भर थे। लाखों लोगों ने अपनी नौकरी खो दी क्योंकि बड़ी उन्नत अर्थव्यवस्था ने 1930 के दशक में महान मंदी के बाद अपनी सबसे गहरी मंदी का सामना किया। इस संकट से पुनरुद्धार की प्रगति भी पिछली मंदी की तुलना में बहुत धीमी थी (जो वित्तीय संकट से जुड़ी नहीं थीं)।

मुख्य शब्द – वैश्विक वित्तीय संकट , मंदी का दौर, उन्नत अर्थव्यवस्था

भूमिका

वैश्विक वित्तीय संकट को वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्र में शुरू हुई बड़ी आर्थिक तबाही के रूप में बताया जाता है। अमेरिकन वित्तीय प्रणाली के गिरने से शुरू होकर, आर्थिक आपदा तेज़ी से दुनिया के दूसरे देशों में फैल गई। मौजूदा वैश्विक व्यापार प्रणाली के आपस में जुड़े बाजार ही वित्तीय संकट के तेज़ी से फैलने की मुख्य वजह थे।

संकट के पहली बार होने के कई साल बाद भी, वैश्विक वित्तीय संकट के असर को पूरी तरह से समझना आसान नहीं है, क्योंकि आर्थिक आपदा वैश्विक बाजार में रुकावट डालती रहती है और उन्हें खत्म करती रहती है। अमेरिका में आवास प्रणाली, वित्तीय बाजार और बैंकिंग उद्योग में एक साथ आई गिरावट के कई कारण थे।

हालांकि संकट के कारणों पर अभी भी बहस होती है, लेकिन यह घटना लगभग तुरंत ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में फैल गई। आमतौर पर, संयुक्त राष्ट्र वैश्विक वित्तीय उद्योग और स्टॉक व्यापार में एक असरदार भूमिका निभाता है। इसका मतलब है कि इस गिरावट ने अमेरिका के अंदर और दुनिया भर के देशों में एक गंभीर नकारात्मक प्रभाव डाला।

आर्थिक संकट का बड़ा असर वर्ष 2007 के आखिर में शुरू हुआ, जब दुनिया भर में ईंधन और खाने की चीज़ों की कीमतें बढ़ने लगीं। कुछ साल पहले जो कारण मामूली लगते थे, जैसे उर्वरकों की कीमतों में बढ़ोतरी, उन्होंने फसल उद्योग और विकासशील अर्थव्यवस्था में खाने की चीज़ों के आयात को खत्म करना शुरू कर दिया।

वर्ष 2008 में जब अमेरिका में वित्तीय संकट गहराया, तो बैंकों जैसे वित्तीय संस्थान ने खासकर विदेशी निवेश में अपना खर्च कम करने की कोशिश की। इससे दुनिया भर में आपदा और गहरी हो गई क्योंकि कई देश अपनी अर्थव्यवस्था के बने रहने के लिए संयुक्त राज्य के विदेशी निवेश पर बहुत ज़्यादा निर्भर थे।

ग्लोबल गवर्नेंस

हाल ही में वैश्विक एकीकरण में ज़बरदस्त बढ़ोतरी ने ग्लोबल गवर्नेंस की क्षमता को काफी हद तक दबा दिया है। वैश्वीकरण के गहराने से ग्लोबल गवर्नेंस के लिए ज़िम्मेदार संगठन और नीति की कमी बढ़ गई है। यह वैश्विक वित्तीय संकट और उसके गंभीर असर में स्पष्ट रूप से दिख रही थी । जिस तेज़ी और बारंबारता से एक देश से दूसरे देशों में आर्थिक आपदा फैलती है, उससे पता चलता है कि वित्तीय संगठन को काफ़ी मज़बूत करना कितना ज़रूरी है ताकि यह पक्का हो सके कि वे तेज़ी से, सुधार के और असरदार कदम उठा सकें।

वैश्विक आर्थिक गवर्नेंस में सुधार, वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था में चल रही बातचीत को फिर से शुरू करने का मुख्य कारण है। कई राष्ट्रीय आर्थिक नीति जो लागत प्रभावी होती हैं, कुछ हद तक इसलिए काम करती हैं क्योंकि उनसे दूसरे देशों को फ़ायदा होता है, लेकिन ज़्यादातर नीति तभी सफल होती हैं जब उन्हें दूसरे देश भी अपनाएँ।

IMF ने तर्क दिया है कि वैश्विक संकट का मुख्य कारण वित्तीय प्रणाली का ठीक से विनियमन न होना और बाजार अनुशासन की कमी थी। सिर्फ़ वैश्विक असंतुलन से यह संकट नहीं आ सकता था, अतः वित्तीय संगठन में निवेशकों की

ज़्यादा आय की मांग को पूरा करने के लिए नए तकनीकी और प्रणाली बनाने की क्षमता विकसित करनी रहेगी ।

आखिरकार, ये तकनीकी उम्मीद से ज़्यादा जोखिमयुक्त हो गए। हालांकि, कई निवेशकों ने अलग-अलग एजेंसियों द्वारा क्रेडिट पर किए गए विश्लेषण पर भरोसा किया, इस तरह बढ़ी हुई कीमतों में अपनी उम्मीद के बावजूद परिसंपत्तियों की पहले से जांच करना जरुरी नहीं समझा गया । इसे आर्थिक संकट के मुख्य कारणों में से एक माना गया।

हालांकि, संकट में सबसे बड़ी भूमिका खराब और बेअसर वित्तीय नियामक की थी, जिसे शैडो बैंकिंग सिस्टम भी कहा जाता है। हेज फंड्स, इन्वेस्टमेंट बैंकों और मॉर्गेज सेक्टर के आपस में बहुत ज़्यादा जुड़े हुए लेकिन ढीले-ढाले नियामक संजाल पर विवेकपूर्ण नियामक तंत्र नहीं था। उन्हें नियंत्रित नहीं किया गया क्योंकि उन्हें कभी भी बैंकों की तरह सुव्यवस्थित करना ज़रूरी नहीं माना गया। उनके विनियमन की कमी ने बैंकों के लिए पूंजी निवेश से बचना और भी आकर्षक बना दिया, क्योंकि इन एंटिटीज़ को सारा जोखिम उठाना पड़ा। समय के साथ, यह सांस्थानिक संजाल बहुत बड़ा हो गया और जिसे सुव्यवस्थित करना ज़रूरी बन गया। वर्ष 2007 के आखिर तक, संयुक्त राज्य में बैंक जैसे संगठन जो विवेकपूर्ण रूप से नियंत्रित नहीं थे, उनके परिसंपत्ति लगभग $10 ट्रिलियन थे, जो अमेरिका के नियामक बैंकिंग प्रणाली के परिसंपत्ति के लगभग बराबर थे।

इस संकट के ग्लोबल असर का बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था और इसने वैश्विक वित्तीय जुडाव पर फिर से सोचने पर मजबूर कर दिया। भले ही वैश्विक एक्सपोज़र ने संकट के समय कुछ अर्थव्यवस्था के लिए रुदिवादी संपत्ति हस्तांतरण के ज़रिए थोड़ा इंश्योरेंस दिया हो, लेकिन वैश्विक एक्सपोज़र ने एक नुकसानदायक भूमिका निभाई, जिससे संकट तेज़ी से अमेरिकन हाउसिंग बाजार से पूरी अमेरिकन अर्थव्यवस्था तक फैली और फिर दूसरे देशों में फैल गया।

इन आर्थिक कमियों को वित्तीय क्षेत्र के बड़े नियमन से रोका जा सकता था। क्योंकि वित्तपोषक हमेशा प्रस्तावित नियमन से बचने का कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेते हैं, इसलिए वैश्विक गवर्नेंस अपने प्रस्तावित नियमन को लागू कर सकता था और उन बाजार भागीदारों के खिलाफ कार्रवाई कर सकता था जो नियमन के खिलाफ जाते थे।

बैंक

दुनिया तेज़ी से वैश्विक बचतों की भरमार से अंतरराष्ट्रीय तरलता में अचानक कमी की ओर बढ़ गई। जब लेवरेज होता है तो झटके बड़े होते हैं और तेज़ी से फैलते हैं। 2000 के दशक की शुरुआत में, बड़े अमेरिकन व्यापारिक बैंकों और वैश्विक निवेश बैंकों के लेवरेज में काफी बढ़ोतरी हुई थी। हालांकि वित्तीय संकट शुरू होने से पहले व्यापारिक बैंकों को लेवरेज स्तर की कोई समस्या नहीं लगती थी, लेकिन जब संकट शुरू हुआ, तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय बैंकों ने दुनिया भर में झटके फैलाने में बहुत अहम भूमिका निभाई। इस कनेक्शन का एक चैनल वह तरीका है जिससे ये बैंक पूरे बैंकिंग संगठन में तरलता को नियंत्रित करते हैं। बैंक विदेशी लिंकेज, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग लिंकेज के साथ समझौता और वैश्विक लेंडिंग फैसलों के ज़रिए अपनी तरलता को प्रबंधित करके दुनिया भर में झटके पहुंचा सकते हैं। हालांकि, बैंकिंग संकट और मंदी का नए रिश्ते बनाने पर बुरा असर पड़ता है; सभी बैंकों या सभी देशों पर एक जैसा असर नहीं होता है। वर्ष 2007 के संकट ने यह पैटर्न दिखाया और बैंकों के अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव में नए कनेक्शन बनाने पर इसका बहुत बुरा असर पड़ा।

वित्तीय संकट ने बैंकों को उधार देते समय बहुत सावधान कर दिया और इसका मतलब था कि नए रिश्ते नहीं बने। बैंकों ने उधार कम करके संकट को तेज़ी से फैलाने में मदद की। इसका असर अंतरराष्ट्रीय तरलता कम होने और साथ ही संयुक्त राज्य में बैंकों द्वारा डॉलर आपूर्ति करने में अहम भूमिका निभाने के कारण, उधार कम होने से डॉलर तरलता की अंतरराष्ट्रीय कमी हो गई। फेडरल रिजर्व ने दूसरे केंद्रीय बैंकों के साथ मिलकर संकट से निपटने के लिए डॉलर डाले।

निवेशक

जैसे ही बैंकों ने बॉर्डर पार लोन और तरलता कम की, उसी समय निवेशकों ने विदेशी बाजार में अपने पूंजी प्रवाह में कटौती की। वित्तीय संकट के दौरान, अंतरराष्ट्रीय तरलता में बदलाव, संकट की घटनाएं और जोखिम का पूंजी प्रवाह पर बड़ा असर पड़ा। ये असर सभी देशों में बहुत अलग-अलग थे, लेकिन इस बदलाव का एक बड़ा हिस्सा समष्टि आर्थिक मूलाधार की मजबूती, देश के जोखिम और घरेलू संगठनों की गुणवत्ता में अंतर के रूप में बताया गया था।

कोष प्रबंधक और कोष निवेशकों ने भी संकट को अन्य देशों में फैलाने में भूमिका निभाई। म्यूचुअल फंड निवेश में उतार-चढ़ाव कोष प्रबंधन और निवेशकों द्वारा हर फंड के प्रबंधन में बदलाव के ज़रिए प्रेरित किया जाता है।

प्रबंधक के साथ-साथ निवेशक भी राष्ट्रीय संकटों, जोखिम पर प्रतिक्रिया करते हैं और वैश्विक वित्तीय संकट जैसी आर्थिक घटनाओं के प्रतिक्रिया में अपने निवेश में काफी बदलाव करते हैं। प्रबंधक और निवेशक दोनों का व्यवहार कुछ हद तक चक्रीय होता है क्योंकि वे बुरे समय में देशों से बाहर निकल जाते हैं और जब आर्थिक हालात बेहतर होते हैं तो देशों में अपना एक्सपोजर बढ़ा देते हैं। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में निवेशक एक ऐसा ज़रिया हैं जिसके ज़रिए वर्ष 2007 का वित्तीय संकट उनके पोर्टफोलियो में शामिल देशों में तेज़ी से फैला, जिससे वैश्विक वित्तीय संकट पैदा हुआ।

असली लिंकेज

ये वो चैनल भी हो सकते हैं जिनसे वित्तीय संकट तेज़ी से दुनिया भर में फैला। उदाहरण के लिए, ज़्यादातर एशियाई देश संयुक्त राज्य के सबप्राइम और आवास बाजार से जुड़े नहीं थे और इसलिए, ऐसी अर्थव्यवस्था के निवेश और सीधे बैंक रिश्तों के ज़रिए अमेरिका के साथ कमज़ोर कनेक्शन थे। फिर भी, इन एशियाई अर्थव्यवस्था को वर्ष 2008 और वर्ष 2009 में आउटपुट में भारी कमी का सामना करना पड़ा।

वित्तीय संकट का उन कंपनियों पर ज़्यादा बुरा असर पड़ा जो व्यापार और मांग को लेकर ज़्यादा संवेदनशील थीं, खासकर उन अर्थव्यवस्था में जो व्यापार के लिए ज़्यादा खुली थीं। हालांकि, वित्तीय खुलेपन से बहुत कम फ़र्क पड़ा। इससे पता चलता है कि कुल मांग और व्यापार प्रवाह के असर से हस्तांतरण के असली चैनलों ने वैश्विक वित्तीय संकट को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

वित्तीय संकट वैश्विक गवर्नेंस में बदलाव का ज़रिया बन सकता है और पारंपरिक आर्थिक प्रणाली से बदलाव का संकेत दे सकता है। वैश्विक वित्तीय संकट ने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक क्रम के बीच बड़े अंतर को सामने लाने में मदद की है। चीन जैसी कई उभरती हुई अर्थव्यवस्था का राजनीतिक और आर्थिक महत्व बढ़ रहा है, लेकिन ज़रूरी सांस्थानिक में उनका प्रतिनिधित्व उतना नहीं है। भले ही संकट पर प्रतिक्रिया ज़्यादातर वित्तीय प्रणाली पर रहा है, लेकिन मौद्रिक मामलों के साथ-साथ विश्व व्यापार पर भी ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

इस बात पर बहस चल रही है कि क्या G20 या G8 जैसे अनौपचारिक संस्थान को सच में वैश्विक वित्तीय संगठन की प्राधिकार और गवर्नेंस को बदलने में कोई भूमिका निभाना चाहिए। G20 अपने मौजूदा रूप में इस कर्तव्य में कामयाब होने के लिए पूरी तरह से सही नहीं हो सकता है; असल में, सिर्फ़ मौजूदा IFI को

बढ़ाने और उन्हें बदलने के लिए कुछ न करने से निर्भरता और व्यवसाय के हमेशा की तरह बने रहने का जोखिम है।

अगर वैश्विक गवर्नेंस का मकसद वैश्विक आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करना और चुनौती पर प्रतिक्रिया करना है, तो उसे सुधार करने की ज़रूरत है। वैश्विक गवर्नेंस का मुख्य काम सिर्फ़ G7 के विचारों को ही नहीं, बल्कि सभी सम्बद्ध देशों के विचारों और हितों को ध्यान में रखकर अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का प्रबंधन करना है।

सन्दर्भ सूची

1- Crotty, J 2009 'Structural causes of the global financial crisis', *Cambridge journal of economics*, vol. 33 p. no. 4, pp. 563-566.

2- Gelos, G 2009 'The global crisis: explaining cross-country differences in output impact', *Social science research network, vol.* 23 no. 4, pp. 15-17.

3- Helleiner, E 2009 'Regulation and fragmentation in internal financial government special forum: crisis and the future of global financial governance', *Global governance*, vol. 15 no. 1, pp. 16-21.

4- Porter, M 2011 'Managing in the new global economy', *Harvard business school*, vol. 2 no. 2, pp. 7 – 12.

5- Rogoff, K 2008 'Is the 2007 U.S subprime financial crisis so different', *The national bureau of economic research*, vol. 2 no. 1, pp. 2-3.

6- Shin, H 2009 'Reflection of the northern rock: the bank run that heralded the global financial crisis', *Journal of economic perspectives, vol.* 23 no. 1, pp. 101-104.

7- Fidrmuc, J (2010) 'The impact of the global financial crisis on business cycles in Asian emerging economies', *journal of Asian economics, vol.* 21 no. 3, pp. 293 – 312